रात्रिक्लास 28-2-68 ओमशान्ति मन्मनाभव

ब्राह्मण होते ही हैं राजयोगी। यह ब्राह्मणों का कुल है ना। परन्तु उनको सर्वोत्तम कुल नहीं कहेंगे। तुम ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। कैलाश, तुमको कितने बाप हैं? सब से अच्छा कौन सा है? (अलौकिक) क्यों? हम तो शिवजयन्ती हीरे जैसा कहते हैं बाकी सब कौड़ी मिशल है। फिर तुम अलौकिक कैसे कहती हो। अच्छा क्रिश्चन लोगों का भी तीन बाप है या सिर्फ भारतवासियों का? तीन बाप है सब को। परन्तु पहचानते नहीं हैं। जैसे भगवान कहते हैं परन्तु उनके बायोग्राफी को जानते नहीं हैं। क्रिश्चन भी आदम यू मानते हैं मुसलमान भी आदम बीबी कहते हैं। सिर्फ लौकिक बाप बिगर और कोई के बायोग्राफी को नहीं जानते हैं। न अलौकिक न पारलौकिक को जानते हैं। कहने मात्र कह देते हैं। प्रजापिता तो बहुत कर के भारतवासी वैसो ही कहते हैं। महावीर भी कह देते हैं। बच्चों को बहुत कुछ समझाना पड़ता है। वन्डरफुल बात है ना। समझा सकते हो मनुष्य मात्र के तीन बाप है। तो भल पूछे। तुम्हारे पास आते तो बहुत ही हैं। वोतो हम रीसल बात पूछते हैं। आप भी मनुष्य हो। मनुष्य को कितने बाप हैं? यह जरूर जानते हैं गाड है। ऐसे कोई नहीं कहेंगे गाड फादर नहीं है। सिर्फ तुम ही यथार्थ रीति आपरेशन को जानते हो। लौकिक बाप को भी जानते हो कितने जन्म इस चक्र में आते हैं। देवताओं को वहां प्रजापिता ब्रहमा का पता नहीं रहता। बिचार करना पड़ता है किसको कितने बाप हैं। देवतायें भी पारलौकिक बाप के आपरेशन को नहीं जानते हैं। अभी तुम नालेजफुल बन रहे हो। अर्थात् रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को तुम जानते हो। इसलिए बोर्ड में लिखते हो जो रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं वह एडियट हैं। आते हैं तो उन से पूछना चाहिए ना। कितने बाप हैं? पारलौकिक बाप को तुम इस समय ही जानते हो। याद करते हो। वह है हद का बाप यह है बेहद का। बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना है। जितना जो घड़ी2 समझाते रहते हैं उनको भिन्न2 पाइन्ट्स याद रहती है। बैरिस्टर, डाक्टर आदि को जितनी पाईन्ट्स हैं उतनी ही आमदनी होती है। शान्ति के लिए पवित्रता के लिए भी समझाना बहुत सहज है। वायलेंस और विभस वर्ल्ड यह समझाना बहुत सहज है। सतयुग में हैं ही पवित्र देवतायें। योगबल किसको कहा जाता है इसको तुम ही जानते हो। बहुत बातें हैं समझाने लिए। पुरुषार्थ बिगर भी तुम रह नहीं सकते। हर बात में पुरुषार्थ करना होता है। महारथियों के आगे घोड़े सवार प्यादे की लज्जा आती है। क्लास में सब एक समान तो नहीं पढ़ेंगे। अभी तुम पढ़ते हो भविष्य नई दुनिया के लिए। ऐसा कोई जानते ही नहीं कि यह पुरुषोत्तम संगम युग है। कलियुग के बाद है सतयुग। वहां हैं श्रेष्ठाचारी। यहां हैं भ्रष्टाचारी पतित। तो यह पुरुषोत्तम संगम युग इसको कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं कल्प2 राजयोग सिखाने आता हूं। बाप कहते हैं मेहनत लगती है। मैं जो हूं जैसा हूं कोई जानते नहीं हैं। परमात्मा का रियलाईजेशन परमात्मा ही कराते हैं। कितना आत्मा में पार्ट भरा हुआ है। छोटी सी चीज़ में। यह बड़ी वन्डरफुल बात है। समझाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी। हरेक एक्टर्स अपना2 पार्ट भिन्न2 नामरूप देश काल रिपीट करती है। यह भी समझते ही ज्ञान सागर बाप हीहमकोसब कुछ देते हैं। सर्वशक्तिवान बाप का वर्सा चाहिए ना। एकदम विश्व का मालिक बना देते हैं। तुम बाप से बेहद की शक्ति लेते हो। जिससे तुम विश्व का मालिक बनते हो। लक्ष्मी की राजाई कैसे मिली क्या हुआ कुछ नहीं जानते। तुम बच्चों को बहुत खुशी भी होनी चाहिए। बेहद को देखने से ही अथाह खुशी होनी चाहिए। अम्बा भरे बीबी भरे फिक्र की बात ही नहीं। सिर्फ देवताओं के फिक्र से परिपूर्ण न रहे। कोई न कोई फिक्र रहता है। वहां फिक्र की बात ही नहीं। बाप भी बेफिक्र बादशाही देते हैं। तो क्यों नहीं लेना चाहिए। माया के विघ्न पड़ते हैं बराबर। सभी स्टुडन्ट को यह खुशी तो होनी चाहिए। हम बापदादा के बच्चे हैं। इन से कोई ऊंचे है नहीं। भक्ति से ट्रान्सफर हो ज्ञान में आना मेहनत है। बाप ने समझाया भी है कर्मातीत अवस्था को कब पावेंगे। वह असार दिखाई पड़ेगी। अभी सभीको मैसेन्ज ही कहां मिला है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।